

जन्म से पहले भी शिशुओं के दिव्यांगता का चलेगा पता

नई दिल्ली, (पंजाब केसरी): हर इंसान चाहता है कि उसका बच्चा स्वस्थ हो, लेकिन ऐसा हर किसी के साथ हो नहीं पाता। हालांकि देश में ऐसी तकनीक भी है जिससे जन्म से पहले ही भ्रूण के दिव्यांगता का पता लगाया जा सकता है।

लेकिन इस तकनीक में भ्रूण से खून लेकर जांच करने की वजह से भ्रूण के मृत होने की संभावना भी रहती है। लेकिन अब ऐसी तकनीक भी आ गई है जिसमें मां ही खून से भ्रूण की दिव्यांगता का पता लगाया जा सकेगा। एम्स सहित देश के 10 अस्पतालों में हुए अध्ययन में पाया है कि नॉन इन्वैसिव प्रीनैटल टेस्ट (एनआईपीटी) पारंपरिक जैव

दिल्ली के सभी अस्पतालों में यह सुविधा उपलब्ध

रासायनिक परीक्षणों की तुलना में अजन्मे शिशु में गुणसूत्र असामान्यताओं का पता लगाने में अधिक प्रभावी है। गर्भ धारण करने के करीब 11 सप्ताह बाद इस टेस्ट को किया जाता सकता है। डॉक्टरों बताते हैं कि देश में हर साल करीब ढाई करोड़ बच्चों का जन्म होता है। इनमें से करीब

35 हजार बच्चे अनुवांशिक विकारों की वजह से दिव्यांग पैदा होते हैं। 166 में से एक बच्चा बीमारी ग्रस्त होता है, जबकि डाउन सिंड्रोम (गुणसूत्र संख्या 21 की ट्राइसोमी) होने की आशंका 800 में से एक शिशु में होता है। उन्होंने बताया कि इस टेस्ट में कम जोखिम का खतरा रहता है।